अबलौं नसानी अब न नसैहौं

Ab Lau Nasani Ab Na Nasaihon • भजन • देवनागरी

अबलौं नसानी, अब न नसैहौं।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं॥

पायेउँ नाम चारु चिंतामनि, उर कर तें न खसैहों।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित कंचनहिं कसैहौं॥

परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं।
मन मधुकर पनकै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं॥

रचना / पाठ-परंपरा: गोस्वामी तुलसीदास, विनय-पत्रिका का पद।
पारंपरिक पाठ; वर्तनी और पाठांतर संभव हैं।